स्वामी दयानंद आश्रम, ऋषिकेश में दिनांक 22 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम हेतु श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन

मुख्यमंत्री श्री त्रिवेद्र सिंह रावत जी, उत्तराखण्ड विधानसभा अध्यक्ष श्री प्रेमचंद्र अग्रवाल जी, श्री कृष्ण गोपाल जी, स्वामी परमात्मानंद जी, डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी जी, केबिनेट मंत्री श्री सुबोध उनियाल जी, स्वामी विदित्मानंद जी, श्री विरेश कोठारी जी, श्री वेंकेटरामाराज जी, श्री रामकीनी जी,

ज्ञान व अध्यात्म के विशिष्ट स्थल स्वामी दयानंद आश्रम में अध्यात्म की महान विभूतियों के बीच आकर, मैं अपने आपको गौरान्वित महसूस कर रहा हूं। इस कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित करने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद व आभार।

पूज्य स्वामी दयानंद सरस्वती जी ज्ञान, दर्शन व आध्यात्मिकता की अद्‌भुत मिसाल थे। अध्यात्म के साथ ही मानव जाति की सेवा में भी उनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। उन्होंने ऑल इंडिया मूवमेंट फॉर सेवा की स्थापना की। संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्वामी जी को वर्ष 2005 में ECOSOC (Economic and Social Council) के सलाहकार का स्तर प्रदान किया गया। यह संस्था भारत के दूरदराज के क्षेत्रों में विशेष तौर पर शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करती है। स्वामीजी ने ज्ञान–दर्शन व सेवा भाव का जो रास्ता हमें दिखाया है, उस पर चलकर ही मानव कल्याण सम्भव है। मेरा परम सौभाग्य है कि सितम्बर 2015 में प्रधानमंत्री जी के साथ आश्रम में आने पर मुझे स्वामीजी का आर्शीवाद मिला था।

आर्ष विद्‌या परिवार, स्वामी दयानंद आश्रम ने पूज्य स्वामीजी द्वारा समय–समय पर विभिन्न अवसरों पर दिए गए व्याख्यानों व व्यक्त किए गए विचारों का संकलन कर उन्हें एक ग्रन्थ का रूप दिया है। यह बहुत ही पुनित कार्य है। पुस्तक में प्रकाशित लेख, साधारण लेख नहीं हैं। इनमें वेदांत के महान अध्येता की शिक्षाओं व बौद्धिक विचारों को सम्मिलित किया गया है। जैसा कि मुझे बताया गया है कि इस पुस्तक में विभिन्न विषयों को आच्छादित करते हुए वेदांत के विजन को स्पष्ट किया गया है। इसमें मुख्यतः "Seeker & the Sought", "The self evident nature of Eye", "Vision of Guru", "Accepting the order", "Vedanta & Yoga", "The Law of Creation" हैं। पुस्तक में स्वामी जी के कुछ साक्षात्कार भी प्रकाशित किए गए हैं। इनसे अवश्य ही स्वामीजी के विचारों को आत्मसात किया जा सकेगा।

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है। अन्य समकालीन सभ्यताओं में से बहुत सी सभ्यताएं पूरी तरह से लुप्त हो चुकी हैं तो कुछ में काफी बदलाव आ गए हैं। कुछ

सभ्यताएं पुनर्जीवित भी हुई हैं। परंतु यह भारतीय सभ्यता ही है जो कि 5 हजार वर्षों से अपना मौलिक स्वरूप बनाए हुए है। धर्म, अध्यात्म व मूल्य आधारित व्यवस्था ही वे ताकतें हैं जिनके कारण भारतीय सभ्यता सदियों से कभी न रूकने वाली धारा की तरह लगातार प्रवाहित हो रही है। भारतीय सभ्यता, उपनिषदों में स्थापित अविनाशी सत्य पर आधारित है।

भारतीय सभ्यता को बहुत सी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा है। ब्रिटिश इतिहासकार Arnold Toynbee ने अपनी "Theory of Challenges and response" में कहा है कि सभ्यताओं को समय–समय पर सिस्टम के अस्तित्व के लिए गम्भीर खतरा बनने वाली कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में स्वामी रामकृष्ण व स्वामी विवेकानंद जैसी सृजनशील व दिव्य विभूतियों का आविर्भाव होता है जो कि समाज का पुनर्स्थापन करते हैं।

सबसे पहले 8 वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने समाज को ऐसी कठिन परिस्थितियों से बाहर निकाला। 15 वीं व 16 वीं शताब्दी में गुरू नानक, तुलसीदास, कबीर, मीरा बाई, सूरदास, चैतन्य महाप्रभु व अन्य संत कवियों ने हमारा मार्ग प्रशस्त किया। बाद में 19 वीं शताब्दी में श्री रामकृष्ण, स्वामी विवेकानंद, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज ने समाज को राह दिखाई।

19 वीं शताब्दी के चुनौतिपूर्ण समय में श्री रामकृष्ण ने वेदांत के ''प्राणिमात्र की सेवा ही ईश्वर की सेवा है'' के संदेश के साथ हिंदु धर्म को फिर से नई ऊर्जा दी। वेदांत, हिंदु धर्म की आधारशिला है। श्री रामकृष्ण ने वेदांत के सिद्धांतों का अभ्यास किया, उनकी व्याख्या की और प्रचारित किया। वेदांत एक आध्यात्मिक परम्परा है जो कि पांच हजार वर्षों से निरंतर अगली पीढ़ियों को हस्तांतरित की जाती रही है।

वेदांत ज्ञान की पराकाष्ठा है, हिंदु संतों की पवित्र बुद्धिमत्ता है, सत्य के मनीषियों का श्रेष्ठ अनुभव है। यह वेदों का निष्कर्ष है। वेद का तात्पर्य है 'ज्ञान'। वेदों के अंत में होने के कारण उपनिषदों को वेदांत कहा जाता है। कुल 108 ज्ञात उपनिषद हैं। इनमें से 10 उपनिषदों में ब्रह्मविद्या का ज्ञान केंद्रित है। बौद्ध काल के पश्चात शंकरा परम्परा में 10 उपनिषदों व भगवद्गीता की व्याख्या की गई। इन सारगर्भित व्याख्याओं को ज्ञान के साधकों तक पहुंचाने में दयानंद आश्रम का महत्वपूर्ण योगदान है।

उत्तराखण्ड देवभूमि है। प्राचीन काल से ही ऋषि मुनि, सत्य की तलाश व योग साधना के लिए हिमालय में आते रहे हैं। मां गंगा के किनारे अध्यात्म व दर्शन पर गहन

चिंतन–मनन होता रहा है। स्वयं को जानने के लिए देवभूमि उत्तराखण्ड से बेहतर अन्य कोई स्थान नहीं हो सकता है।

हमारे ऋषि–मुनियों व विद्वानों के हजारों वर्षों के गहन चिंतन से रचित वेद, उपनिषद, महाकाव्य, पुराण आदि महान मार्गदर्शी रचनाएं, मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। हमारा दायित्व है कि हम अपने अध्यात्म, ज्ञान व दर्शन की विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संजो कर रखें। जितना जरूरी बच्चों को आधुनिक तकनीक व विज्ञान की शिक्षा देना है, उतना ही आवश्यक है कि बच्चों को हमारे सांस्कृतिक मूल्यों व आचार–व्यवहार की दीक्षा भी दें। विश्व शांति, विश्व कल्याण और विश्वबंधुत्व की भारतीय दर्शन की अवधारणा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूरी दुनिया के लिए और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है।

वेदांत के नियमों का पालन कर मानव जीवन को सुखी बनाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हम सांसारिक मोहमाया से ऊपर उठकर 'सत्य' को जानें और उसे आत्मसात करें। आज हर इंसान के मन में अशांति है, जीवन लगातार अवासदग्रस्त होता जा रहा है। सांसारिक सुख के लिए हम वास्तविक सुख से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे समय में बहुत जरूरी है कि वेदांत व ब्रह्मविद्या का प्रकाश, चारों ओर फैले। सामान्य व्यक्ति, वेदांत दर्शन से तभी लाभान्वित हो सकता है जबकि इनकी सरलतम रूप में व्याख्या की जाए और सर्वसाधारण को आसानी से उपलब्ध हो। वेदांतों में वर्णित ज्ञान से सम्पूर्ण मानवता का कल्याण सम्भव है।

परम पूज्य स्वामी दयानंद जी का पूरा जीवन ज्ञान, आध्यात्मिकता व मानव सेवा को समर्पित रहा है। स्वामी दयानंद आश्रम, पूज्य स्वामीजी द्वारा दिखाए गए ज्ञान व मानव कल्याण के रास्ते पर निरंतर आगे बढ़ रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ग्रंथ के रूप में प्रकाशित यह संकलन, आने वाले समय में समाज का दिशा निर्देश करेगा और मानव उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान करेगा।

इसी के साथ ही मैं स्वामी जी को एक बार फिर से नमन करते हुए आज्ञा लेता हूँ। मेरी ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद **जय हिन्द!**